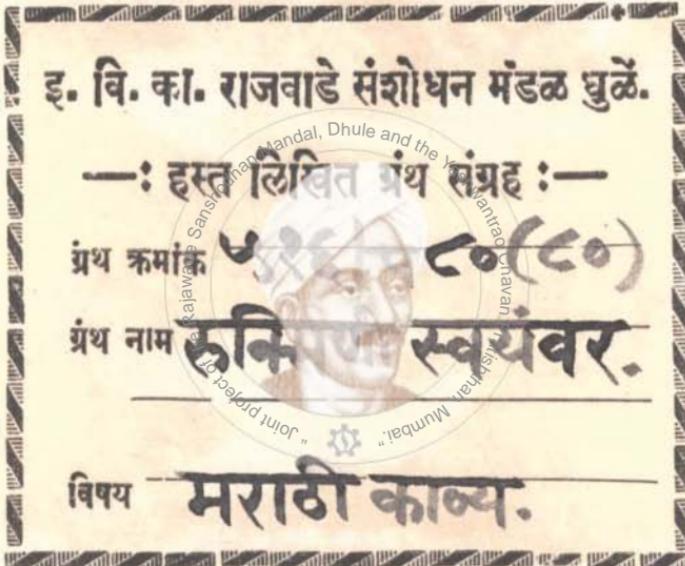


इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ८ ८०(८०)
ग्रंथ नाम ठनि स्वयंवर.

विषय मराठी काव्य.



प्राप्तिकामा

निराशा

गेशयत्वमः ॥ श्रीसरस्वत्येनमः ॥ श्रीउरुच्यानमः ॥
नमोजीवक्तनाथा ॥ गपोशसरस्वतिनामधरि ॥
तुचिदुकुचदेवता ॥ कवपालातप्रथमि ॥ १ ॥
तुचिअरिक्षभवद्वेद् ॥ जगुरुद्वेजन्ते ॥
हलकथसिलाविसीम ॥ जातगुणगवद् ॥ २ ॥
जाईकाहूक्षकथाप्रवरा ॥ चित्तदृतिवेधालंजा ॥
पा कर्माकमिअरंउपगालागलध्यानमिमकिति ॥ ३ ॥
अकथागिद्रोप्र ॥ प्रश्नकेलपरिहिति ॥ मिमकिह
गाश्रीपति ॥ कायनितिपैकेल ॥ ४ ॥ मुहुपलि

रितोसि प्रश्ना। तरिमियकोदकजाण। करीनकथा
 मृतपान। तेजवनमज्जतुङ्गे॥४॥ विशषहेहृत्तु
 काथाचरित्र। परितु सर्वदमुख्यं पवित्र। त्रि
 वराकरितां मासश्रोत् अभिकल्पवल॥५॥ इतर
 कथानकेषु उडि। नैयन्तु तनैचिगाडि। सेतुं जा
 पाति जे आवडि तेपरा। उपावले॥६॥ हेहृत्तु
 निप्रश्नाच्या आदर। शुक्रकेयसिजालासादर कि
 संबोलिलावचनगंजिर। हृपाञ्जपाररायाचि॥७॥
 जाइकबापरिहिति। तुंतवं सुखवाची सुखमृति॥८॥

निमकिपाणियहणस्थिति। यथानिउतिसागेन ॥
॥५॥ अगवसुदेवोन्विषेतप्राप्ति। श्रीहल्लदेवकि
उदरोयति। श्रीहल्लचिद्वल्लशक्ति। जालिउतर
तिभ्रमंडक्का॥१०॥ कन्त सवज्जेसिकांति। सहया
सवज्जेसिहसि। तेस रल्लहल्लशक्ति। वे
द्वन्दवेशिरुक्मिरी॥११॥ ज्ञ हतिमंतविवक्क। ते
साजापारजानिमकु। स वाथीलभतिसातिकु।
निष्कलंकुरा इत्तेस॥१२॥ अद्वापत्तिशुद्धमति।
जालीगन्नातेधरिति। तेधेजन्मलिहल्लशक्ति॥

(2)

प्रसाग वोइ १८। पाना १९२।

यितृशक्ति स किम् पि ॥ १३ ॥ नवनिधा ते चिनव मा
स। गज्जन्मिरले पुर्णदिवस। सांगजन्मलिखूपस।
(2A) नवनिधा न र किम् पि ॥ १४ ॥ पाचाविषयाचासवति।
सद्बुद्धिजपजे जेवीग। तैसि पांचाहिधाकुटि।
जालीगोरटिरुक्मि। जेहुनिजन्मलिकुसि।
तैहुनिजावउराया सि। न्यकरनिपाचासि तचि
यकोपठियंति ॥ १५ ॥ स्वरुपत्तपं अतिसुंदर। लावन्य
गुणगुरागं निरोदिवसों दिवस जालिथोर। वर
विचाररामासि ॥ १६ ॥ तेष्ये की तिना मात्रासुणा गया।

पासी आला जाए। ते पों के लें हृष्ण की वर्तन। ते श्रेत्र नु म
न वेद्य ले॥१७॥ बै सलि हाति गया पांसी। सादृश देखा
निनिमि किसी। ते पों वर्षी चैहृष्ण रुपा सी। चित्त स्व
रुपा सिसा कारा॥१८॥ न ने रजनि विकार। निष्कर्म
नि रोपचार। ता चिजे ता कार। लीला दिग्रहे
श्री हृष्ण॥१९॥ जति सुर। रणतकँ। उपमुकुठि न
सतो त्यक्तं। बाल सहया न्द्रान जाक्कं। ते सिंकवंकदं
चाच्छी॥२०॥ इव जवज्जं कुशर रवा। चरणि चीसा
मुदिक देखा। नवर्पविति सहस्र मुखा। ब्रह्मादिकां

(3)

२

३

अलक्षा॥२२॥ पीढो निर्दनी व किञ्चि वो तिलिङ्ग
लुतनु सावधी। पाउल सुकुमार कावचि धाटि
निक्षिदा हिनगी॥२३॥ सुनी व न साविया क चि
का। ते शा आगो विय रवा। वरि न रवेसां चंद
रे रवा। चरण पिय धलिया॥२४॥ सोड
निकठि न तो चउि ब। नननगजसंन ते से
चरण स्वयं न। हृहृशा ररी शानति॥२५॥ हृहृ
जांगो जउले पणो। विजुसि पुटेजालं चागुणो॥
विसरलि जस्त मानाजाणो। पीतो वरपणं कास सी॥२६॥

लहलचरणाचेनिजूषपों। वांकिनेवेदासिआणिले
उनें। तेतवधसनिठेलमोन्य। लहलकीतनेहगजी॥२६॥

(4) ४

सोहंनावाचनिगजें। यशशिगजतिनेपुरे। मुमु
क्षाचेमननिदसुरें। यात्रैदरेकरितसे॥२७॥

तोउरगजेकवणमा। न्यमरणहरेन्यरण॥

नाहिउपासकालारु। संकल्पविकल्पगलि
यां॥ अजनंतरुपनाककवेदी। तभाकविज
जविंसद्बुद्धि। तैसिमेशब्दमाजामद्धि। चिदृपसं
धीजउलिजसे॥२८॥ स्वपदपावलियापाढिंजेवि

प्रसाग ११ वाक्यादिवाचना

दति होय उपराटि। तैशा किं किं निष्ठु दघंटि। अधो
दृष्टि मे रवक्ति सिं॥३१॥ जुति शय सिमाज साना। ढोता
जासि मान पंचानना। देरबा निहल मध्यरचना। ला
जा निवना तो गेला॥३२॥ पाह वधा श्रीहल मध्यरचना।
चित्रि चील पंजालि जंगु निजांगि च्याज मि
माना। मे रवक्ति रवक्ता। जउ जे॥३३॥ नानी सि ना
भी ना भिता। देरबा निरारवला विधा ता। तैयि चापा
रुपा होता। पैंविधा ता ने णीची॥३४॥ मुणा निपञ्चना
भी ना वां। उदरि त्रिलोक्य साठो वा। जे विसाग रामा

जिवेवा। तरंगा चाहो उनिरेला॥३५॥ सागरी लूहरी
चीन का बिनी तेसि जे दरि त्रिमुणि विवाहि कमी कम
रामा वक्षि। बहि मुख वो ढलिया॥३६॥ न कवह द
इच्छ महिमान। उपनिषद् उलंगौ न्यो न्यो तेथे हिसंय
रले सज्जन। द्वादशि तां उनि॥३७॥ शुन्य सं
उनि निरावकाशा तर्फ। अहृत्य सावकाशा सं
रोक्त कला रहि वास। दृति शुन्य हो जनी॥३८॥ हृष्ण
पदिजे सलिन। तेचो जु उत्पदक जाप। मुक्त माति
लग संप्रणी गुण विनले इलास॥३९॥ जान वे राम

(5)

पराग आशा ३॥१८॥ पान ५॥१२॥

संपुटि निपज्जिमुक्तमातियेंगे सदिं तेचियेकाव
ब्बोकंठि। हृष्णजग्जरिले ईला॥४०॥ जेनविजनसमा
नक्का। तेचिजापादवनमाक्का। शांति निजेशांति नि
र्मक्का। स्वेगक्कं वैजे ॥४१॥ अंकारमात्रुकासक
ट। तोचिजापावाकं ॥४२॥ जेष्ठनिवेदाचमुक्तपीठ।
तथुनिप्रकटत्रिकां ॥४३॥ रवणानिउपनिषदाचि
रवाणि। अर्थकाढिलाजाधुनि। तोचिकंठिकौस्तुन
मणि। निजकीरणीसक्कहुन॥४४॥ गगनगजोचे
चुंजादंड। तेसेसरुक्कवाहुदंड। पराक्रमेभतिप्रचंड।

(SA)

Rajavade Sa
Sindhian Mandal, Buland Shahi
and the Nasirabad
Court Library
Digitized by srujanika@gmail.com

जनयहानाउदीतु॥४८॥पंचन्तेनीन्ननीनोतरा
जागोक्तियाजापा।मध्यतक्कातभाधिष्ठान।पांच
हिमिळतियेकउष्टि॥५॥चटुंराणियक्तियाशक्ति।
याचिच्याक्तिभजारोनेति'जायुधंडातवसलिहा
ति।कवणियास्त्रिति॥५॥अयंततेजेतेजा
कार।दैस्यदक्तनिति।र।तेचिधगधगीतचक्ति॥
अरीमहनुजद्रटा॥५॥आधायेअनिमानकरीचेंद्रा।ते
चिसकफक्तिपैंगदा।निःशदिंउठविशब्दा।वेदानु
वादापांचजन्यु॥५॥अनेदनक्तमजमेटति।तेकांसु

© Balaji de Souza, S. Jan Mandel, Shree and the
Royal College of Chavhan Pratishthan Deemed
University, Deemed University, Deemed University

प्रसंग १॥ बोई ॥ ८८॥ प्रान ॥ १९२॥

मने कै स्थिमिक्ति तया च पुजे लगिला ति। हृष्यक
सङ्कवाहा तु से॥ ४८॥ बाहेवाटा की निरुखें च्याकि
वेदजाल मुक करी कै करत उत्तित माणि के। वाति
कांत वेदांता॥ ५०॥ यंत्र उत्तर न उपासका॥ त्यागिजे
गुलि मुद्रिका॥ त्रिकोणि कोणि करणि का॥ जडि
त माणि का जाग माला॥ ५१॥ पुर्वउत्तर मिमांसा दि
नि॥ कुंडले जउलि हस्तश्रवणि॥ उपर्णि षट्ठथ
किरणि॥ सङ्ककति का निसते जे॥ ५२॥ युक्त भगति
साकोर॥ येह लपति मकराकार॥ परिते साचारनि

(2)

विकारा प्रवणविकारमावृत्ति॥८३॥ गच्छुनियमो
 हसुरवा तयन्चामुसावो निदरिश्वा तेचिलेलानेश्वा
 मुरवा नित्यनिदोषमिरवता अ॒। उपमन्त्रेऽक्षकाग
 हृता तोतवंहृलपत्ती तेरा उद्यजलुविपसंपू
 र्ण॥ वदन्तुहृलक्ष्मान् जीवशिवएकाकारा
 तेसमिन्नलहृनिभवधं ना जिहंतपंति तेजाकार
 चित्तानंहृसक्कर्ति॥८४॥ नासिकादउनिनास्तीक
 उच्चावेलेतेनासिका पवनहि उतापावलादः रव॥
 हृद्यश्वासेसुरिजाला॥८५॥ विशाव्युत्तेचैतन्य

(3)

राधादेविशद्धेन मानदेविशद्धेन
 यान्त्रिको विशद्धेन प्रभाविता एव
 विशद्धेन प्रभाविता एव विशद्धेन
 विशद्धेन प्रभाविता एव विशद्धेन

प्रथम गृहीतोऽन् ॥१८॥ पान ॥११२॥

घनातेष्वेविसांवोंजालेपाहनाजापआपणियांदेरव
नासबाद्यांतरसमदृष्टि ॥ धाराज्ञानज्ञानाचिपां
तिं मिथ्यापणलवत्तेनात्रिं तेहिसारनिमांगुतिस
हेजस्थितिपाहातुस ॥ अधिष्ठानविशाक्खालिं ।
तेसिशोभाहृष्णकपे ॥ त्रितननंदयकमुक्तिं ॥
तेनित्रिवल्लिलल्लालि ॥ उगाक्षुनिभठकरिन
पणा सोहंकाठिलंशुद्दयदनातेहिकेलेहृष्णाप
णा निजसालिमुक्तिवद्वा ॥६९॥ सपुरगगनांकुरसर
क्षा तेसेमस्तकिकरकुरक्षा हृष्णमुरवेसि विमुरव

(२८)

सबूक्वा अधो मुरिंधा विनले ॥६२॥ तरणो निरेक्या
चिये मुष्टि जापु निबांध लिविरंगुंठि सहज भावा
न्या मुकुटि मगुदा टले रुवद्धा ॥६३॥ तथा मुकुटा त
क्लवटि मुक्कमया प्रपत्ति वृद्धि कैसे रोन ताह
गामटि हरया दृष्टि धा सलोक समीप स्व
रूपता तेतवं पीसोसां विथा हरवण विषया व
सक्ता तो चिमाथा स्तवका ॥६४॥ अक्कंका रामा जिआ
वडि जेये श्रीहृष्णा चिअधि करोडि तेचिसांगो वि
सरलोंकुटि चुकिगा टिपउलिअस ॥६५॥ सक्क

प्रसागथा वोइ॥१८॥ पान॥१३॥

न घण्टा न घण्टा | ब्राह्मणा चाह क्षणचरणा | तदयिंवाह
ना रायणा | श्रीवच्छलो च नगो विद्वा | अहं स्थिया श्रीहृ
ल्लाची मृतो | पाहाता लवन्यज्ञालक्रिजगति बुरवा
बुरवा श्रीपति वत्त्वा | भन्तु वाहों || ध्वा जे जें अ
न्यं तसुं दरहिसे | तत्ते | यनिलेवों | तोक्यां तेपो
ल्लविलपिसों | ज्ञाले | संहर आंगि || ध्व (सों) द
र्यो च अस्मिन्नाना | मुदन ओंगी होता संपुणि | तेपो द
रविला श्रीहृल्ला | स्वदहासि वीटल्ला | उिना | मदन श्रीहृ
ल्लदरिल्ला सांग | आंग जाकुनिजाला जनंग | पोदा

(8A)

(9)

येतनियाचांग। उत्तमांगपावला॥७॥ बरवेंपेण मी
 माटी। होतेलहस्तमीचापाटी। हल्लदरखानियांहटि॥
 तहिउकराटिलजिल्लिरि॥ कृपानाकानियाकेसि॥
 रमाजालिपरमपीति॥ लारमेनवेद्दहुल्लासि॥ जालि
 दशिपाथांयी॥८॥ नदरविलाज्याहटि॥ तप
 रतानिमागुतिनुरिः॥ काजाधिकधालिमिठि॥
 हायसल्लिनहरिकपि॥९॥ हल्लपाहावयाचेजोभा॥
 नयनानयनिनीघुतिजीना॥ अवणि श्रवणासि व
 ल्लना॥ अनिनवशोनाहल्लाचि॥१०॥ छल्लरसजे

प्रत्यगै बोइ॥१८॥ पान॥१३॥

सवित। सालिपि कें होय अंमृत। अमर खमृत तात स
वित। ते हिचरफ़ उत हरि रसा॥७६॥ श्रीयावारवृणि
ति जमरङ्। हृद्दल इंद्रो नाहि इंद्र। क्षयो पावति इंद्र
चंद्र। हृद्दल न रुद्र॥७७॥ जसुर सुर जया
पति। ते गाकाणे हि ति। इंद्र चंद्र प्रजापति॥
तहि चरफ़ उनि दि जा। जा। तव विजर श्री हृ
द्दल न थु। कें सक लिया करि धारु। दवासि निज पदि
स्था पिदु। अमर न थु श्री हृद्दल॥७८॥ श्री हृद्दल एसा
त्रि शुद्धि। उदारन दरवास्त्रा मुद्धि। सेव कावे सउ

(9A)

(10)

९०

निनिजपुदिं भक्षयसि हि देवनियां ॥८०॥ नेदिच
 देव कियशादसि। तगतिदधल पूतने सिसमा
 नहन्त्वरिमित्रासी। उदारतेसि कायवण्णी ॥८१॥ नि
 जपुदेसी हृष्णनाथ। नक्तमिजापणयादेतां आ
 पणठोयनकाकि ॥८२॥ तिष्ठतस्यापासी ॥८३॥
 नक्तआज्ञामानीमा संहसुकरहीयजगजेरि।
 प्रकटलोकारहियकाह्वचनासाटिनकाच्या
 ॥८४॥ ऐसाधीरवीरउदार। गुणागुणागंभीर। प
 श्ववरीयद्वीर। दुजानाहिसरथा। ॥८५॥ श्रीहृष्ण



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com